Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

वर्तमान परिपेक्ष्य में ध्रुपद गायन

DR. ASHOK KUMAR[1] & PRIYANKA RAWAT[2]

[1] Assistant Professor, Dept. of Music, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand
[2] Research Scholar, Dept. of Music, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

सारांश

भारतीय संगीत का इतिहास परम्पराओं का इतिहास है। ऐसे में हमें विभिन्न गायन शैलियों की विविधता का दर्शन, विभिन्न कालों में बदलती परिस्थितियों के साथ आये जनरुचि में बदलाव से भी अवगत कराता है। इनमें से एक पड़ाव ध्रुपद गायन शैली का भी है। ध्रुपद गायन शैली एक अति प्राचीन गायन शैली है। ध्रुपद गायन शैलियों को मन्दिर में, देवालयों में गाया जाता था। ध्रुपद के चार भाग स्थाई, अन्तरा, संचारी एवं आभोग होते हैं तथा ध्रुपद गायन शैली की चार बानियाँ क्रमशः गोवरहार, डागर, खण्डार, नौहार हैं। ध्रुपद गायन को प्रचलित हुए पाँच सौ वर्षों से अधिक हो गए , किन्तु इधर लगभग डेढ़ सौ वर्षों से ध्रुपद गायिकी का प्रचार कम हो गया है यदि वर्तमान समय की बात की जाये तो ध्रुपद गायन शैली का क्या अस्तित्व रह गया है तथा इसका कितना अधिक प्रचलन वर्तमान में हो रहा है। इस विषय पर चर्चा प्रस्तुत शोध पत्र में की गई है।

मुख्य शब्द - ध्रुपद, बानियाँ, कलाकार, गायन, शैली, वर्तमान आदि।

भूमिका

भारतीय संगीत के इतिहास पर दृष्टिपात करने के उपरान्त संगीत के समृद्ध और विशुद्ध रूप के विषय में उल्लेख प्राप्त होता है। जिसमें ध्रुपद गायन शैली को अति महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ध्रुपद गायन शैली भी शास्त्रीय गायन शैलियों का एक रूप है। ध्रुपद शब्द का शाब्दिक अर्थ है रचना या गीत जिसमें संगीत के समस्त अवयय अर्थात् स्वर, ताल एवं शब्द अचल या अडिग हों। ध्रुवा शब्द का उल्लेख भरत कृत नाट्य शास्त्र से प्राप्त होता है। यह ध्रुवा गति छन्द निबिद्ध होता है। भरत ने इसमें 18 अंगों के प्रयोग का वर्णन किया है। ध्रुवा एक ऐसी रचना थी जो कि काव्य, स्वर तथा छन्द निबिद्ध थी। इसमें निश्चित अंग थे तथा उस रचना के गीत में गति, वर्ण, ग्रह, अलंकार आदि का प्रयोग किया जाना आवश्यक था। डागर बानी के गुंदेचा बन्धु के अनुसार ध्रुपद गायन शैली अति प्राचीनम गायन शैली है। ध्रुपद से ही हमारी सभी शास्त्रीय संगीत की शैलियाँ का जन्म हुआ हैं जिसका आधार नाद योग पर आधारित हैं। 'ध्रुव शक्ति' का वास्तविक अर्थ है, शान्ति, सादगी, स्थिरता, अमृत्व तथा पवित्रता आदि । ध्रुपद परम्परा में संगीत के व्याकरण एवं अनुशासन के प्रति सहज प्रतिबद्धता तथा स्वर ताल आदि की सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रयोग विधि के फलस्वरूप संगीत की अन्य विधाओं जैसे ख्याल आदि के शिक्षार्थियों के लिये भी यह एक अप्रतीम पथ-प्रदर्शक है। संगीत के लक्षण मूलक एवं दुर्लभ एतिहासिक तथ्यों से भरपूर ध्रुपद की ग्रन्थगत सामग्री भी सांगीतिक दृष्टि से परम उपयोगी है साथ ही स्वामी प्रज्ञानानंद के अनुसार प्रबंध मुख्य रूप से भक्ति संगीत था और प्रबंध के आधार पर ही ध्रुपद की रचना होने के कारण ध्रुपद भी आरम्भ से मन्दिरों में गाये जाने लगे। अबुल फजल ने ध्रुपद के लक्षणों का वर्णन करते हुए कहा है कि ध्रुपद तीन या चार लयबद्ध पंक्तियों से निर्मित पद है। ध्रुपद का प्रचलन आगरा तथा ग्वालियर के आसापास के प्रदेशों में अधिक रहा है। ध्रुपद गायन शैली में नाम-तोम् के आलाप होते हैं। इस गायन शैली के गायकों को कलावन्त की संज्ञा भी दी गई है।

ध्रुपद की उत्पत्ति एवं विकास

ध्रुपद गायन शैली शास्त्रीय संगीत की प्राचीनत् गायन शैली में से एक है। एसा माना गया है कि प्राचीनम् प्रबन्ध गायन शैली से ही ध्रुपद गायन शैली की उत्पत्ति हुई है। ध्रुपद गायन शैली की उत्पत्ति कब हुई और किसने की। इसके विषय में कोई संतोषजनक जानकारी उपलब्ध नहीं है। वर्तमान में ध्रुपद गायन शैली के सम्बन्ध में केवल इतना ही उल्लेख प्राप्त होता है कि पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ध्रुपद गायन शैली की रचना ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर ने की थी। राजा मान सिंह तोमर के आश्रय में एक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

संगीत विद्यालय भी ग्वालियर में चलती थी, जिसमें धुरपद गायन शैली की शिक्षा प्रमुख रूप से दी जाती थी। कैप्टन विलियर्ड के अनुसार ध्रुपद का आरम्भ राजा मान सिंह तोमर के समय से हुआ हैं। और इन्होंने ध्रुपद गायकों के पिता राजा मान सिंह तोमर को माना है। श्रीपाद बन्धु उपाध्याय के मतानुसार ध्रुपद का उद्गम प्राचीनम् गायन शैलियों जैसे छन्द, प्रबन्ध तथा जाति आदि से हुआ है क्योंकि ध्रुनद में इन गायन शैलियों के सम्पूर्ण लक्षण पाये जाते हैं जो कि एक राग के गायन हेतु अति आवश्यक माने गये हैं या उसकी विशिष्टता मानी गयी है। ध्रुपद की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों में मतभेद भी है कुछ विद्वानों के अनुसार ध्रुपद गायन शैली का आविष्कार १५वीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर द्वारा किया गया परन्तु कुछ विद्वानों का मत है की ध्रुपद का प्रचलन १५वीं शताब्दी से पहले भी था। ध्रुपद के प्रचार एवं प्रसार में राजा मानसिंह तोमर ने अविस्मरणीय योगदान दिया है। बादशाह अकबर के राज दरबार में जितने भी उच्च कोटी के गायक थे वे सब ध्रुपद गायन शैली से थे। इन सब गायकों में वृन्दावन के स्वामी हरिदास के शिष्य तानसेन को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। तानसेन के अतिरिक्त भी अन्य कई उच्च काटी के ध्रुपद गायक भी बादशह अकबर के राज दरबार में थे। जिनमें प्रमुख रूप से नायक बैजू, चिन्तामणी मिश्र, नायक गोपाल आदि प्रसिद्ध ध्रुपद गायक थे। ध्रुपद गायन शैली का प्रचार एवं प्रसार मुग़ल कल में अधिक मात्रा में हुआ। हेतु प्रबन्ध गायन परम्परा के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ध्रुपद के घरानों के उद्भव की पृष्ठभूम के विषय जानकारी प्राप्त होती है। प्रबन्ध विभिन्न जातियों में भी विभाजित थे। जिसमें प्रबन्ध के तीन विभाग सूड, आलिक्रम तथा विप्रकीर्ण इनके तीन उपविभाग थे इतने अधिक प्रबन्ध के प्रकारों में संगीतज्ञ अलग-अलग विभागों में निपुणता प्राप्त करते थे। अतः प्रबन्ध के इन प्रकारों के गायन करने वालों को एक ही वर्ग में रखने से इनमें भी सांप्रदायिक विभिन्नता का स्वरूप देखा जा सकता है। प्रबन्ध के उपरांत विकसित ध्रुपद की शैलियों की चार बानियां खण्डार, डागुर, गोवरहार एवं नौहार इस बात का प्रतीक है कि शास्त्रीय नियम एक समान होते हुए भी स्वर लय के विभिन्न प्रयोग, आवाज के लगाव, आलाप तान की प्रधानता, अलंकार वर्ण आदि की प्रचुरता के आधार पर संगीतज्ञों के विभिन्न वर्ग बनाये गये, जिन्हें वर्ग समुदाय बानी या घराना किसी भी नाम से सम्बोधित किया गया है।

ध्रुपद की बानियाँ

मौहम्मद करम इमाम ने चारों बानियों को उल्लेखित करते हुए इन बानियों को जाति या प्रदेश से संप्रयुक्त किया है। तथा चारों प्रकार की बानियों की गायन शैलियों का उल्लेख किया है। ध्रुपद की चारों बानियों के विषय में चर्चा करते हुए स्वयं संगीत सम्राट तानसेन द्वारा रचित ध्रुपद में इस प्रकार से गायी है।

बानी चारों के ब्यौहार सुनी लीजो हो गुनीजन तब पावे यह विद्यासार।

राजा गुरुवरहार, फौजदार, खण्डार, दीवान, डागुर, बक्सी नौहार।

अचल सुर पंचम, चल सुर ऋषभ, मध्यम, धैवत, निशाद, गन्धार।

सप्त तीन इकईस मूर्छना, बाईस सुरति, उनचास कूट तान तानसेन अधार।

इसमें गुवरहार को सर्वोत्तम अर्थात् सर्वश्रेष्ठ, खण्डार को फौजदार अर्थात् गुवरहार से कम, डागुर को दीवान अर्थात् गुवरहार एवं खण्डार की अपेक्षा निम्न और नौहार को बख्सी से सम्बोधित किया गया है। इन चारों बानियों का नामकरण कब हुआ इसका कोई भी प्रमाणिक उल्लेख प्राप्त नही होता है लेकिन ग्रन्थों में प्राप्त जानकारियों से इन चारों बानियों के आधर पर नामकरण के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण मतों को निकाला जा सकता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

गुवरहार वाणी

ऐसा माना जाता है कि गौरीहार बानी का प्रचलन अधिकतर तानसेन और उसकी शिष्य परम्परा में रहा एवं तानसेन को गौरीहार बानी का आदर्श माला गया तथ इस बानी का प्रचार - प्रसार में तानसेन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। गउहरहार का तत्सम रूप ग्वालियरी वाणी माना जाता है, वस्तुतः इस वाणी की उत्पत्ति ग्वालियरी से हुई है एवं ग्वालियर में ध्रुपद गायन में पहले गाये जाने वाले ढंग या शैली को ग्वालियरी कहा जाता था। ध्रुपद की वाणियाँ अकबर के शासनकाल में प्रचलित हुई मानी जाती है। इसे गौड़िया या गौरीहार वाणी भी कहा गया है। जिसे तानसेन ने अपनी ध्रुवद में शुद्ध वाणी कहा है, इसे राजा की उपाधि दी गयी है। गौवरहार या गौड़िया वाणी को इस नाम से प्रख्यात होने का कारण तानसेन का गौड़ बाह्मण होना है। शुद्ध वाणी के रूप में भी गौहर वाणी को वर्णित किया गया है जिसका अर्थ है शुद्ध गौवरहार वाणी की शैली गति में धीमी है तथा भारी है। इसलिये इस शैली में साँस पर नियंत्रण करना अत्यन्त आवश्यक होता है। वर्तमान समय में इस वाणी को कम सुना जाता है परन्तु पहले के समय में यह वाणी ध्रुपद गायन के सर्वोच्च पद पर आसीन थी। इस कारण गोवहर वाणी सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है। इसका प्रतिपादन शब्दों और छंदो के बीच के अंतराल के साथ सीधा और सरल था, जिसे मींड द्वारा पाटा जाता था। यह शांत, गंभीर और भक्ति रसों को चित्रित करने वाली विलंबित गति में रचनाओं के लिए आदर्श रूप् से अनुकूल था।

डागर वाणी

राजस्थान के डागुर नामक स्थान के निवासी बृजचन्द इस गायन शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं। अनेक मतों के अनुसार इस वाणी का नाम डागर भी माना गया है, जिसका अर्थ 'पन्थ' है। उसी से डागर बन गया परन्तु किसी प्राचीन ग्रन्थ में इसका उल्लेख प्राप्त नहीं है। कुछ आंचलिक मतों के अनुसार डागर का अर्थ बड़ा अर्थात् श्रेष्ठ वाणी माना गया है। किन्तु इसका भी उचित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। डागर वाणी की प्रमुख्य विशेषताओं में अलाप-जोर-झाला का परिष्कृत, सूक्ष्म, शांत और कठोर प्रदर्शन है, जिसमें राग की सूक्ष्मताओं को चित्रित करने वाले माइक्रोटोनल विभाग पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है 20वी शताब्दीं तक यह विशुद्ध रूप से एक गायन शैली थी लेकिन जिया मोहिउद्दीन डागर के रूद्र वीणा के नवाचार के बाद से गायन शैली का बारीकी से रूद्र वीणा में पालन करते हुए रूद्र वीणा को प्रदर्शन में स्थान मिला है। डागर वाणी द्वारा एक अलंकृत मधुर रेखा को दर्शाया जाता है। डागर वाणी की विशिष्टता मींड है। इस वाणी की मुख्य विशेषता एक स्वाभाविक और सीधी चाल के साथ सरलता व शालीनता है। आलाप, तान लेने का तरीका हर स्वर को इतना सूक्ष्म व गहरा बनाता है कि वे अप्रशिक्षित तथा अकुशल कानों के लिए मुश्किल से ध्यान देने योग्य हो जाते हैं। डागर वाणी की शैली में विस्तार का क्रम अत्यन्त मधुर देखा जा सकता है। यह वाणी गमक के साथ कोमल रूप से निष्पादित घुमावदार मींड पर केन्द्रित है। इस वाणी की मुख्य कला मेरुखण्ड आलाप में निहित है। जोकि डागर, मुरन, कम्पित, आन्दोलित, गमक, आकार, घुरण, हुड़क, लहक और स्फुर्ती नाम के दस लक्षणों से संरचित है। डागर वाणी में आवाज लगाने का ढंग इतना नाजुक है जहाँ हम कई श्रुतियों का प्रयोग करके स्वर रंगों मे सुन्दरता पा सकते हैं। डागर वाणी शुद्धता, सरलता, संरचना तथा सही उच्चारण के लिये प्रख्यात है।

खण्डार वाणी

राजस्थान के खण्डार स्थान के निवासी नौबत खाँ द्वारा इस वाणी का प्रचार-प्रसार किया गया है। राजपूताना (अब राजस्थान) में खण्डार नामक स्थान जो आज भी विद्यमान है। बादशाह बाबर द्वारा जिस समय यहाँ के दुर्ग पर विजय प्राप्त की गयी थी, उस समय राजपूताने का यह दुर्ग राणासांगा के अधिकार क्षेत्र में था। उस समय अनेक मुसलमान कलाकार खण्डार आकर बसे तथा यहाँ के स्थानीय संगीत की शैली तथा शास्त्रीय संगीत शैली के संयोग से खण्डार वाणी का जन्म हुआ। खंडार वाणी भारी और जोरदार गमकों का उपयोग किया जाता है। जो वीरता को अभिव्यक्त करती थी। खण्डार वाणी को गोबहार वाणी के समान धीमी गति से नही गाया जाता था। वीरता को अभिव्यक्त करती हुई खंडार वाणी में भारी और जोरदार गमकों का उपयोग किया जाता था।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

खण्डार वाणी की प्रमुख विशेषता जोड़ व आलाप थे जो रुद्र वीणा द्वारा बजाये जाती थी। इस वाणी की ध्रुपद रचनायें अधिकतर मध्य और दुरत लय में गायी गयी थी। कंधार क्षेत्र के राजा समोखन सिंह एक प्रसिद्ध बीनकार थे। इस प्रकार उनकी गायन शैनली कंधार या खंडार वाणी के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस वाणी में मजबूत चाल ही इस वाणी की विशेषता है। खण्डार वाणी में जोरदार तथा भारी गमकों को उपयोग में लाया जाता है। इस शैली में वीर रस का अधिक समावेश देखने को मिलता है। इसमें रचना को मध्य तथा द्रुत लय में गाया जाता है। इस वाणी में गायक लयबद्ध तरीके से बोल-तानों की श्रृंखला को एक नया रूप देता है। यह वाणी तेज और उग्र वीर रस को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त थी।

नौहार वाणी

श्रीचन्द को इस वाणी का प्रवर्तक माना जाता है। तथा अन्य मतानुसार नौहार दिल्ली के पास का स्थान है। जहाँ के श्रीचन्द निवासी थे और उनके निवास स्थान के नाम पर इस वाणी को सम्बोधित किया जाने लगा अथवा नामकरण हुआ। मुहम्मद करम इमाम के मतानुसार इस वाणी का जन्म नौहा नामक स्थान पर हुआ है। कश्मीर के शासक फकीरुल्ला भी मुहम्मद करम इमाम के मत के अनुयायी हैं। राजस्थान के इस स्थान का वास्तविक लाम नौहार था जिसको नौहा नाम से भी पुकारा जाता था। नौहारी का अर्थ उसकी वाणी और भाषा है। गमकों के विभिन्न प्रकारों को नियोजित करते हुए त्वरित व झटकेदार मार्ग से आना इस शैली की विशेषता है। नौहार वाणी का उद्भव सोलहवीं शताब्दी के आसपास हुआ था। इस वाणी की विशेषता सादगी और आकर्षण है। इस वाणी में विभिन्न प्रकार के गमकों का उपयोग करते हुए त्वरित झटकेदार मार्ग की विशेषता है। ऐसा भी कहा जाता है कि वर्तमान समय में घरानों के प्रतिनिधि इन चारों वाणियों में से एक शैलीगत तत्वों को प्रकट करते हैं। उदाहरण- आगरा घराने की शैली विलुप्त हो चुकी नौहार वाणी से ग्रहण की गई है। ध्रुपद रचनाओं की प्रधानता के साथ नौहार वाणी को तकनीकी रूप से छूट की शैली कहा जाता है। यह निश्चित रूप से छोटे-छोटे लय पर आधारित गीतों के अद्भुत रस, आनन्द और आश्चर्य को दर्शाने के लिये उपयुक्त था। नौहार वाणी की यह शैली प्रेम और युद्ध के गीत गाते घुमक्कड़ भाँटों के बीच प्रतिपादन के लिये अत्यन्त लोकप्रिय है।

वर्तमान परिपेक्ष्य और ध्रुपद गायन

इसमें संदेह नहीं है कि ध्रुपद की लोकप्रियता के लिए प्रयत्न नहीं किये जा रहे है। इसकी लोकप्रियता एवं प्रचार-प्रसार के लिए बहुमुखी प्रयत्न किये जा रहे हैं और उसके परिणाम भी सामने आये हैं किन्तु ध्रुपद को अभी भी वह अभीष्ट स्थान प्राप्त नहीं हुआ है, जिसका वह अधिकारी है। ध्रुपद गायन के विषय मे चर्चा की जाय तो वर्तमान समय इस गायकी के अनुकूल नही रह गया है ध्रुपद गायन को प्रचलित हुए पाँच सौ वर्षों से अधिक हो गए , किन्तु इधर लगभग डेढ़ सौ वर्षों से ध्रुपद गायिकी का प्रचार कम हो गया है और ख्याल गायन का प्रचार व प्रसार अधिक हो गया है । ख्याल के लोकप्रिय होने क प्रमुख कारण इसकी चंचलता,चपलता, और रस प्रधान होना है । गम्भीर प्रवत्ति के होने के कारण वर्तमान समय में ध्रुपद अधिक पसंद नही किया जा रहा है। वर्तमान समय में हर एक सामाजिक गतिविधियों के लिए समय सीमा एवं समय नियत कर दिया गया है कि इस समय यह कार्य होना है अथवा कार्य नहीं होना है। मानव ने अपने अनुसार समय को अनुकूल बना लिया है। संगीत कार्यक्रमों को समय के साथ बांध दिया गया है संगीत कार्यक्रम में गाने या बजाने हेतु आयोजक समय सीमा निश्चित कर देते है ध्रुपद गायन शैली में आलाप पर अत्यधिक जोर दिया जाता है एक धंटे के कार्यक्रम में 45 मिनट आलाप में निकाल दिया जाता है। जो कि आज के समय में प्रासंगिक नहीं लगता है। ध्रुपद वर्तमान समय में के अनुरूप अपने को परिवर्तित करने में असफल रहा है । जैसे ख्याल ने अपने को समय में के अनुरूप अपने को परिवर्तित किया और समय के अनुकूल परिवर्तित कर भी रहा है जिसका परिणाम यह है कि ख्याल वर्तमान समय में भी अपना अस्थित्व बनाये हुए है। ध्रुपद के प्रति वर्तमान समय में उदासीनता प्रत्यके वर्ग में व्याप्त है अत: यह कहना उचित हि होगा कि वर्तमान समय में ध्रुपद गायन का प्रचलन बहुत कम हो चुका है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

निष्कर्ष

इसका प्रमुख कारण वर्तमान समय की शिक्षा पद्धति है। वर्तमान समय में शिक्षण संस्थाओं के संगीत पाठ्यक्रमों में भी ध्रुपद से अधिक ख्याल का प्रचलन है। पूरे पाठ्यक्रम में ख्याल के लगभग 10 से अधिक राग सम्मिलित होते हैं परन्तु ध्रुपद को एक ही राग में समाप्त कर दिया जाता है। जिस कारण उसकी लोकप्रियता भी ख्याल की अपेक्षा दिन प्रतिदिन कम होने लगी है। समय परिवर्तन के साथ-साथ ध्रुपद का भी बदलना आवश्यक है क्योंकि समय के बदलते हुए कलाकारों ने ख्याल गायिकी में भी बदलाव किया है। जिस प्रकार ख्याल गायन मे परिवर्तन हुआ उसी प्रकार ध्रुपद गायन शैली में भी परिवर्तन करके इसको भी लोकप्रिय बनाया जा सकता है। सदृश्य श्रोताओं की एक आम शिकायत यह भी रहती है कि अधिकांश ध्रुपद गायक उसके सौंदर्य पक्ष के प्रति उदासीन रहते हैं तथा मर्दाना गायिकी के भ्रामक मोह में पड़कर लय ताल के चमत्कार को लड़न्त-भिड़न्त को ही प्रदर्शन का मुख्य अंग मान लेते हैं। प्रयोक्ताओं को किसी भी ऐसी प्रवृत्ति से बचना चाहिए जिसमें रस भंग होता हो। परन्तु वर्तमान समय में ध्रुपद इतना अधिक नहीं हो पा रहा है। संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में ध्रुपद की संख्या में वृद्धि होनी चाहिये, जिससे कि विद्यार्थी ध्रुपद गायन के प्रति आकर्षित हो सके। अधिक मात्रा में ध्रुपद की प्रतियोगिता करानी चाहिये, जिसमें सभी बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करें। आवश्यकता है कि ध्रुपद गायकों को शैली रूचिकर बनाने के लिए इसे अधिक प्रादर्शनिक बनाकर श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत करने होंगे, जिससे वह ध्रुपद को समझे तथा लाभान्वित हो सकें। आज के समर्थ कलाकारों को कुछ नवीन प्रयोग यथाशीघ्र करना चाहिए। ध्रुपद की गरिमा और निमयों को कायम रखकर भी उसमें नयापन लाया जा सकता है। प्राचीन का आधार और नवीन की कल्पना ही संगीत के अभिजात व शास्त्रीय स्वरूप को उजागर और समृद्धि करने में सक्षम होगी। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। इस नियम के अनुरूप जिसने परिवर्तन को स्वीकार किया या परिवर्तन के अनुसार परिवर्तन को आत्मसात किया वह इस संसार में विद्यमान रहा और जिसने परिवर्तन को स्वीकार नहीं किया वह विलुप्ति के पथ पर अग्रसर रहा।

संदर्भ सूची

1. सिसोदिया कामना शोध प्रबन्ध ‘‘मध्यप्रदेश में ध्रुपद गायन शैली: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन’’International Journal of Research -GRANTHAALAYAH, January, 2015
2. www.esamskriti.com/e/Culture/Music/Ancient-Tradition-of-Dhrupad-Music~-Origin-Evolution-and-Presentation 1.aspx, October 2010
3. बृहस्पति आचार्य कैलाश चन्द्र, ध्रुपद और उसका विकास,वर्ष 2000, पृष्ठ सं0 245
4. गर्ग-लक्ष्मी नारायण, संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, अंक 02 फरवरी 1971,पृष्ठ 3
5. https://www.shastriyasangeet.in/, 13-December-2021
6. https://saptswargyan.in/dhrupad-gayan-shaili/, 6-December-2021
7. झा पंडित रामाश्रय, ध्रुपद की चारों वाणियाँ तथा उसके चारों अंगों की गायिकी, संगीत नाटक अकादमी 07 फरवरी 1989, पृष्ठ 13
8. बृहस्पति आचार्य कैलाश चन्द्र, ध्रुपद और उसका विकास, वर्ष 2000, पृष्ठ सं0 248
9. तैलंग डॉ0 मधु भट्ट, ध्रुपद गायन परम्परा, जवाहर कला केन्द्र मार्च 1995, पृष्ठ 27